संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०२५
वर्ष : ३४ अंक : १२ (निरंतर अंक : ३९०)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

गुरुपूर्णिमा विशेष

भारत की आत्मा - आध्यात्मिकता को जीवित रखनेवाली अनादिकाल से चली आ रही गुरु-शिष्य परम्परा

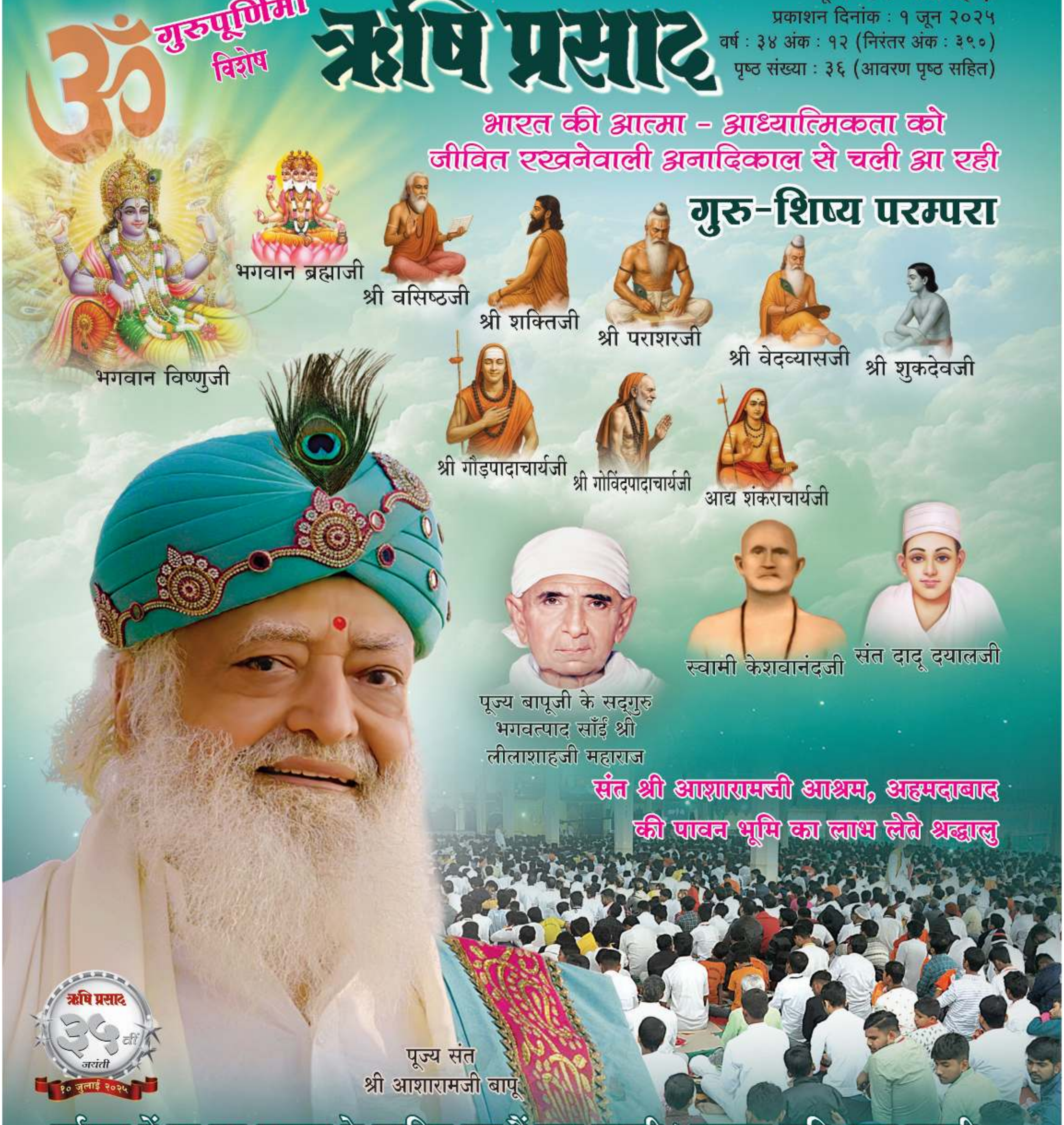

वर्तमान में इस गुरु-परम्परा के सुरभित पुष्प हैं पूज्य बापूजी । जावल्य ऋषि, पूज्य बापूजी, स्वामी अखंडानंदजी, आनंदमयी माँ और अन्य अनेक संतों की चरणरज से पावन हुआ यह आश्रम एक वैश्विक धरोहर है, इसकी सुरक्षा होनी ही चाहिए ।

सरकार आश्रम की भूमि का वर्ष २०१३ में भू-मापन कर चुकी है । इसमें न कोई अतिक्रमण मिला न ही कोई शर्त-भंग का सवाल उठा । २०२४ में भी भू-मापन करवाया, जिसमें कोई अतिक्रमण नहीं मिला । फिर अब शर्त-भंग व अतिक्रमण का सवाल क्यों ?

- श्री निलेश वि. त्रिवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता, अहमदाबाद ७

ऐसे सेवक के हृदय में भगवान के आनंद का फल अपने-आप फलित होता है - पूज्य बापूजी

जो हमारी वृत्तियों की, मान्यताओं की बिखराहट को सत्संग के द्वारा, सेवा के द्वारा सुचारुरूप से व्यवस्थित कर दें ऐसे व्यासस्वरूप आत्मसाक्षात्कारी गुरु मिल जायें तो नित्य जीवन, नित्य रस और नित्य स्वरूप की प्राप्ति हो जाती है। फिर जीवन न दुःख और दर्द है न सुख-सुविधा है, जीवन शाश्वत है - जहाँ प्रलय की आँधी भी कुछ महत्त्व नहीं रखती, जहाँ प्रलय-अग्नि भी शांत हो जाती है। वह नित्य रस, ब्रह्मरस ऐसा रस है कि उसे पानेवाला प्रलय के क्षोभ को भी मिथ्या समझने में समर्थ हो जाता है, प्रलय को भी हँसते-हँसते सह लेता है। पूर्ण जीवन...

पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।...

खूब मस्ती, खूब आनंद... वाह प्रभु ! वाह मौला !...

गुरु पिया ! मोरी रँग दे चुनरिया । ऐसी रँग दे कि रंग नाहीं छूटे...

लेकिन जो गुरुसेवा के सिवाय अन्य कुछ जानता ही नहीं है उस शिष्य को फिर यह कहना भी नहीं पड़ता क्योंकि सेवक कुछ चाहता नहीं, वह तो बस सेवा किये जाता है; भगवान के आनंद, माधुर्य का, गुरुकृपा का अधिकार तो दौड़कर अपने-आप उसके हृदयरूपी घर में बैठ जाता है। सेवक सेवा में ही मस्त रहता है, फल की आकांक्षा नहीं रखता; फल तो अपने-आप लगता है उसके हृदय में - आनंद का फल, सुख का, मस्ती का, धन्यवाद का फल अपने-आप फलित होता है। सेवक तो चाहता है, 'सेवा मिलती रहे, तत्परता से करता रहूँ।' 'किसकी सेवा कर रहा हूँ ? मेरी सेवा कौन देख रहा है ?' यह उसके लिए महत्त्वपूर्ण नहीं। 'जिसके लिए कर रहा हूँ बस वह अंतर्यामी गुरु-तत्त्व देख रहा है' यह महत्त्वपूर्ण है। 'कौन-सी सेवा कर रहा हूँ ?' उसके लिए महत्त्व नहीं - चाहे वह बुहारी कर ले शबरी की नाईं, चाहे संदीपक की नाईं सब प्रकार की सेवा करे, चाहे गोरखनाथजी की नाईं 'अग्या सम न सुसाहिब सेवा'★ यह सिद्धांत हृदय में बसाकर सेवा कर ले। सेवक तो बस सेवा में अपने को धन्य बनाता जाता है लेकिन धन्य बनाने की इच्छा नहीं रखता, अपने-आप ही धन्य बनता जाता है। जितनी ईमानदारी से, तत्परता से, निष्काम भाव से सेवा होगी उतना ही वह सेवक सेव्य के आनंद को, सेव्य के ज्ञान को, सेव्य के अधिकार को उपलब्ध होता जायेगा।

★ आज्ञा-पालन के समान श्रेष्ठ गुरुदेव की और कोई सेवा नहीं है।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३४ अंक : १२ (निरंतर अंक : ३९०)
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी। ज्येष्ठ-आषाढ़, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www .rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'गुरुपूर्णिमा विशेष' अंक में...

❖ **गुरु महिमा** ❊ श्रीगुरु-वंदना ४
❖ **सर्वत्र गुरु को अनुभव करो** - श्री आनंदमयी माँ ५
❖ **बहुचर्चित** ❊ नास्तिकों को भी सोचने पर मजबूर कर रहीं ये विस्मयकारी खबरें ६
❖ **समसामयिक** ❊ आश्रम की जमीन की सच्ची कहानी, दस्तावेजों की जुबानी ! - श्री निलेश वि. त्रिवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता ७
❖ **पर्व विशेष** ❊ अनंत ब्रह्मज्ञान को पाने में सहायक पर्व : गुरुपूर्णिमा ११
❖ **संतवाणी** ❊ दुर्जन को पाप करने से न रोकना, न समझाना पाप है १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ❊ अंतर्यामी गुरुदेव करते सूक्ष्म सिद्धांतों का रहस्योद्घाटन - श्री रामनारायण सिंह १४
❖ **अंतर्राष्ट्रीय समाचार** ❊ ऋषि-विज्ञान के परहित के सिद्धांत को अब विज्ञान भी कर रहा स्वीकार - विकास यादव १६
❖ **कृपा हुई तब जान सके हम** - संत पथिकजी १७
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ❊ जहाँ विश्वास और उत्साह, वहाँ विजय सुनिश्चित ! १८
❊ डरते क्यों हो, पौरुष करो ! ❊ इसीका नाम 'स्वराज्य' है १९
❖ **युवा जागृति समाचार** ❊ अश्लील सामग्री दिखानेवाले प्लेटफॉर्म्स से सर्वोच्च न्यायालय ने माँगा जवाब - मनोज मेहेर २०
❖ **ऋषि ज्ञान प्रसाद** ❊ पूज्य बापूजी का वरदान, ऋषि प्रसाद का ज्ञानदान २१
❖ **समसामयिक** ❊ भारत की राष्ट्रीयता के लिए बड़ा संकट है पश्चिमीकरण २२
❖ **प्रेरक प्रसंग** ❊ 'इनमें कौन-सा अधिक अधर्म है ?' २३
❖ **जयंती विशेष** ❊ ईंटें उठायीं, तम्बूरा पाया, भजन से जग को जगाया २४
❖ **सत्शिष्य की पहचान** २५
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **प्रेमांजलि** ❊ १२९ वर्षीय योगगुरु स्वामी शिवानंदजी को भावपूर्ण प्रेमांजलि २७
❖ **आप कहते हैं** ❊ महामनीषी पूज्य बापूजी की कृपा का वर्णन सम्भव नहीं ! - स्वामी संतोषानंदजी महाराज, प्रसिद्ध भागवत कथाकार २७
❖ **सनातन धर्म के लिए बापूजी अविस्मरणीय हैं** - महामंडलेश्वर स्वामी श्री वेदानंद गिरि, निरंजनी अखाड़ा २८
❖ **जीवन जीने की कला** ❊ आग्नेय आसन २८
❖ **अंतर्राष्ट्रीय समाचार** ❊ सम्पत्ति के वारिस बन रहे कुत्ते-बिल्ली ! २९
❖ **स्वास्थ्य समाचार** ❊ संतुलित निद्रा का लाभ लेकर पायें स्वस्थ जीवन ३०
❖ **आनेवालीं पुण्यदायी तिथियाँ व योग** ३२
❖ **उपासना अमृत** ❊ आध्यात्मिक उन्नति का अनुपम अवसर : चतुर्मास ३३
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ❊ लक्ष्मी की चाहवाले किनसे बचें ? ३४
❊ धन व विद्या प्रदायक मंत्र ३४
❊ कलह-क्लेश, रोग व दुर्बलता मिटाने का उपाय ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu
सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

श्रीगुरु-वंदना

जय सद्गुरु देवन देव वरं,
निज भक्तन रक्षण देह धरं ।
पर दुःख हरं सुख शांति करं,
निरुपाधि निरामय दिव्य परं ॥१॥

'हे सद्गुरुदेव ! आपकी जय हो । आप देवों के देव हैं, सबसे श्रेष्ठ हैं । आपने अपने भक्तों के रक्षण हेतु पृथ्वी पर मानव-शरीर धारण किया है अर्थात् अवतार लिया है । परदुःख का हरण कर सुख-शांति का दान देनेवाले आप माया की उपाधियों से मुक्त, निरामय, दिव्य तथा त्रिगुण आदि से परे हो ।'

जय काल अबाधित शांतिमयं,
जन पोषक शोषक ताप त्रयं ।
भय भंजन देत परम अभयं,
मन रंजन भाविक भाव प्रियं ॥२॥

'हे गुरुदेव ! आप काल से अबाधित हैं, शांतस्वरूप हैं । मानवमात्र के तीनों तापों को हर के उनका पोषण करनेवाले हैं । आप समस्त भयों को नष्ट कर परम अभय पद की प्राप्ति करानेवाले हैं । जिन्हें अपने प्रेमी भक्तों के निर्मल मन के भाव अतिशय प्रिय हैं, ऐसे आप उन प्रेमी भक्तों के मन को प्रभुप्रेम से रँगकर आनंद-उल्लास से भर देते हैं । आप ही उन भक्तों के भावों का एकमात्र प्रिय आश्रय हैं । आपकी जय हो ।'

ममतादिक दोष नशावत हैं,
शम आदिक भाव सिखावत हैं ।
जग जीवन पाप निवारत हैं,
भवसागर पार उतारत हैं ॥३॥

'आप सांसारिक मोह-ममतादि दोषों का नाश करते हैं । शम, दम, तितिक्षा, उपरति, श्रद्धा, समाधान इस षट्सम्पत्ति को प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं । आप जगजीवन हो, जगत के जीवों के पापों का निवारण करते हो तथा भवसागर से पार करते हो ।'

कहुँ धर्म बतावत ध्यान कहीं,
कहुँ भक्ति सिखावत ज्ञान कहीं ।
उपदेशत नेम अरु प्रेम तुम्हीं,
करते प्रभु योग अरु क्षेम तुम्हीं ॥४॥

'हे गुरुवर ! आप कभी धर्म का तो कभी ध्यान-धारणा का उपदेश देते हैं । कभी भक्ति का तो कभी ज्ञान का उपदेश देते हैं । इतना ही नहीं, आप नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर उपासना) और ईश्वर से प्रीति करने का उपदेश देते हैं । हे सर्वसमर्थ, सर्वाधार प्रभु ! आप स्वयं ही अपने भक्तों के योगक्षेम का वहन (अप्राप्त की प्राप्ति तथा प्राप्त की रक्षा) करते हैं ।'

मन इन्द्रिय जाही न जान सके,
नहीं बुद्धि जिसे पहचान सके ।
नहीं शब्द जहाँ पर जाय सके,
बिनु सद्गुरु कौन लखाय सके ॥५॥

'जिसे मन और इन्द्रियाँ नहीं जान सकतीं, जिसको बुद्धि भी नहीं पहचान सकती, जहाँ शब्दमात्र का प्रवेश नहीं है अर्थात् वाणी भी जिसका वर्णन नहीं कर सकती, ऐसे आत्म-परमात्मपद को बिना सद्गुरु के कौन दिखा (अनुभव करा) सकता है ? अर्थात् अन्य कोई भी नहीं ।'

नहीं ध्यान न ध्यातृ न ध्येय जहाँ,
नहीं ज्ञातृ न ज्ञान न ज्ञेय जहाँ ।
नहीं देश न काल न वस्तु तहाँ,
बिनु सद्गुरु को पहुँचाय वहाँ ॥६॥

'जहाँ ध्यान, ध्याता (ध्यान करनेवाला) और

आश्रम की जमीन की सच्ची कहानी, दस्तावेजों की जुबानी !

– श्री निलेश वि. त्रिवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता, अहमदाबाद

समसामयिक
Current affairs

जाबल्य ऋषि की तपोभूमि में बना संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद करोड़ों लोगों का आस्था-स्थल है। इस पर खेल का मैदान बनाने की योजना बनायी गयी है। आश्रम की जमीन को लेकर तरह-तरह की अफवाहें फैलायी जा रही हैं।

जानते हैं वास्तविक तथ्य (without prejudice) :

(१) दशकों पुराना यह आश्रम सरकार-मान्य रजिस्टर्ड पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट है, न कि कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति।

(२) लगभग १० एकड़ की भूमि में ही समूचा आश्रम बसा है। १२० एकड़ की बात पूरी तरह झूठ है। क्रिकेट स्टेडियम के पूरे क्षेत्र सहित मापेंगे तो भी १०० एकड़ नहीं होगा। ओलम्पिक के लिए तो चाहिए ६५० एकड़ और आश्रम की है १० एकड़ से भी कम। तो इतनी जमीन तो अन्यत्र भी मिल सकती है। इसके लिए आश्रम तोड़ना कितना उचित होगा ?

(३) आश्रम ने न तो किसी प्रकार का कोई अतिक्रमण किया है और न ही आश्रम की भूमि भाड़े (लीज) पर ली गयी है।

(४) यहाँ हर प्रवृत्ति चैरिटेबल है, जो कि समाज-कल्याण, लोकहित के लिए की जा रही है, न कि किसी व्यावसायिक लाभ हेतु।

कैसे बनी योजना ?

प्रस्तावित स्पोर्ट्स एन्क्लेव (खेल संकुल, खेल परिसर) जहाँ बनेगा वहाँ तीन संस्थाओं (संत श्री आशारामजी आश्रम, सदाशिव प्रज्ञा मंडल, भारतीय सेवा समाज) सहित अनेकों गरीब नागरिकों के घर हैं। जनता में यह चर्चा का विषय बना हुआ है कि पिछले कई दशकों से ये तीनों संस्थाएँ हैं। तब से ले के अगस्त २०२३ तक सरकार ने कभी इनकी भूमि को लेकर कोई आपत्ति नहीं जतायी परंतु जब ओलम्पिक के निमित्त स्पोर्ट्स एन्क्लेव के लिए जमीन लेने का विचार उठा तब हुआ कि 'कैसे ये जमीनें ली जायें ?' इस पर दिमागी घोड़े दौड़ाये गये कि शर्त-भंग की आड़ में ये जमीनें ली जा सकती हैं और ये प्रकरण प्लान किये गये। इस पर उपरोक्त तीनों संस्थाओं ने आपत्ति जतायी है। जानकारी दिये बिना ही संत श्री आशारामजी आश्रम की जमीन को सीधे रिजर्वेशन (आरक्षण) में रख दिया गया। आगे पूर्वनियोजित योजना के अनुसार तीनों संस्थाओं को एक ही दिन शर्तें भंग करने के नाम पर नोटिसें दी गयीं। इससे सारे मनसूबे उजागर हो जाते हैं।

शर्त-भंग नोटिसों के आरोप व हकीकतें

आरोप : आश्रम ने अवैध कब्जा या अतिक्रमण किया है।

वास्तविक तथ्य : सरकार ने नियमानुसार १९८० में दी गयी जमीन महसूल माफी नियमों के अंतर्गत तथा १९९२, १९९७ व १९९९ में दी गयी जमीन बाजार भाव के अनुसार जमीन की कीमत लेकर आश्रम को दी है। इन ४ आदेशों के

अनंत ब्रह्मज्ञान को पाने में सहायक पर्व : गुरुपूर्णिमा

पर्व विशेष

१० जुलाई को गुरुपूर्णिमा का महापर्व है । सनातन संस्कृति का यह अति महत्त्वपूर्ण पर्व है । यह पर्व संत श्री आशारामजी आश्रम की देश-विदेश की सभी शाखाओं में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है । आश्रमों में प्रभातकाल से ही साधकों के आने का सिलसिला शुरू हो जाता है । इस दिन श्रद्धालुजन अपने ज्ञानदाता गुरुदेव पूज्य बापूजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करके मानस पूजन करते हैं । सत्संग, कीर्तन, प्रसाद-वितरण आदि का दौर पूरा दिन चलता रहता है ।

गुरुपूर्णिमा : १० जुलाई

इस पर्व की आवश्यकता व महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत में आता है :

जीव अनादि है, ईश्वर अनादि है, अविद्या अनादि है, अविद्या व चेतन का संबंध अनादि है, जीव-ईश्वर का भेद अनादि है लेकिन वे अनंत नहीं हैं, केवल ब्रह्म अनादि अनंत है । उस अनादि अनंत के ज्ञान का साक्षात्कार होने से बाकी ये सब सांत (अंतवाले) हो जाते हैं । इन ५ अनादि पदार्थों के प्रभाव का अंत हो जाता है परंतु शुद्ध ज्ञान का अंत नहीं होता । ऐसे शुद्ध ज्ञान को पाने की परम्परा सजी-धजी रहे इसीलिए देवताओं ने वरदान से गुरुपूर्णिमा को मंडित किया । इस पूर्णिमा से साधक पूरा लाभ उठाते हैं ।

जहाँ प्रकृति के, माया के प्रभाव का अंत हो जाता है, जीव के जीवत्व और ईश्वर से भयभीत होने का अंत हो जाता है फिर भी ईश्वर-तत्त्व के ज्ञान का अंत नहीं होता, ऐसे अनंत ब्रह्मज्ञान को पाने की व्यवस्था में सहायरूप होनेवाली पूर्णिमा को गुरुपूर्णिमा कहते हैं ।

'गु' माने अंधकार, 'रु' माने प्रकाश । जो जन्म-जन्मांतर के अज्ञान-अंधकार के संस्कारों को मिटा के जीवन में 'स्व' (आत्मस्वरूप) का प्रकाश, शाश्वत ज्ञान-प्रकाश कर दें उन्हें गुरु कहते हैं । जहाँ सूर्य का प्रकाश भी नन्हा हो जाता है, चन्द्रमा का प्रकाश पहुँच नहीं पाता है, बेचारे अग्नि और तारों का प्रकाश तो पहुँचेगा कैसे ?

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥

(गीता : १५.६)

ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः ।

(श्वेताश्वतर उपनिषद् : अध्याय ६, मंत्र १३)

उस आत्मज्ञान को, आत्मदेव को जानने से मनुष्य सब बंधनों से सदा के लिए मुक्त हो जाता है । ऐसे ज्ञान को पाने की प्रेरणा देनेवाला उत्सव है गुरुपूर्णिमा का उत्सव । मनुष्य सारे धर्म, कर्म और पुण्य कर ले परंतु इस ज्ञान के बिना सब अधूरा है । जड़भरतजी कहते हैं :

'रहूगण ! महापुरुषों के चरणों की धूलि से अपने को नहलाये बिना (अर्थात् उनके हृदय को छूकर जो अनुभव की वाणी निकलती है उसको शिरोधार्य किये बिना) केवल तप, यज्ञादि वैदिक कर्म, अन्नादि के दान, अतिथिसेवा, दीनसेवा आदि गृहस्थोचित धर्मानुष्ठान, वेदाध्ययन अथवा जल, अग्नि या सूर्य की उपासना आदि किसी भी साधन से परमात्म-ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता ।'

(श्रीमद्भागवत : स्कंद ५, अध्याय १२, श्लोक १२)

यह ज्ञान तो गुरुगम्य है । सच्चिदानंद परब्रह्म

विद्यार्थी संस्कार

जहाँ विश्वास और उत्साह, वहाँ विजय सुनिश्चित !

(पूज्य बापूजी की ओजपूर्ण अमृतवाणी से)

परिस्थितियाँ मनुष्य को नहीं बनातीं, मनुष्य परिस्थितियों को बनाता है। भाग्य मनुष्य को नहीं बनाता, मनुष्य अपने भाग्य को बनाता है।

एक बार तक्षशिला को शत्रुओं ने घेर लिया। सेनापति ने आकर राजा से कहा : ''शत्रु का सैन्यबल, राज्यबल हमसे अधिक है। युद्ध में हम हार जायेंगे अतः अच्छा यही है कि हम शरणागत हो जायें, दूसरा कोई उपाय नहीं है।''

तक्षशिला के नरेश को वह बात ठीक भी लग रही थी। इतने में एक महात्मा आ गये और बोले : ''तुम्हारा यह सेनापति तुम्हारी श्रद्धा और मनोबल तोड़ रहा है। इसे अभी-अभी सेनापति-पद से हटा दो और सेनापति का पद मुझे दे दो। मैं तुम्हारी सेना ले के जाऊँगा और जरूर विजयी होकर आऊँगा।''

पहले तो राजा हिचकिचाया लेकिन बाद में उसे हुआ कि इन महात्मा की वाणी में विश्वास और गहराई है। अतः उसने निराशाजनक विचार करनेवाले सेनापति की बात को ठुकरा के महात्मा को सेनापति का पद प्रदान कर दिया।

महात्मा सेना को लेकर आगे बढ़े। शत्रु-पक्ष की सेना और तक्षशिला की सेना के बीच देवी का एक मंदिर था। महात्मा ने सेना को वहीं रोककर सैनिकों से कहा : ''देखो ! अगर देवी माँ 'हाँ' कहेंगी तो हमारी विजय निश्चित है। मैं यह सिक्का उछालता हूँ। अगर सीधा पड़ा तो विजय हमारी होगी और अगर उलटा पड़ा तो हम उलटे पैर वापस लौट चलेंगे।''

यह कहकर महात्मा ने अपनी जेब से सिक्का निकाला और आसमान में उछाला। सिक्का धरती पर सीधा गिरा। महात्मा ने कहा : ''देखो-देखो, सिक्का सीधा पड़ा है। हमारी विजय निश्चित है। भले ही शत्रु संख्या में ज्यादा हैं किंतु माँ ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। अतः विजय हमारी ही होगी !''

इस प्रकार महात्मा ने तीन बार सिक्का उछाला और तीनों बार सिक्का सीधा पड़ा। इससे सैनिकों के मनोबल में दृढ़ता व श्रद्धा का संचार हो गया और वे पूरे जोश के साथ युद्ध में कूद पड़े। देखते-ही-देखते वे शत्रु-पक्ष की विशाल सेना पर इस तरह हावी हो गये मानो हाथियों के झुंड पर सिंह। थोड़े ही समय में शत्रु सेना के पैर उखड़ने लगे और तक्षशिला की सेना की जीत हो गयी।

सैनिक प्रसन्नता से कह उठे : ''देवी माँ की जय !... देवी माता ने ही हमें विजय दिलायी है।''

महात्मा ने रहस्योद्घाटन करते हुए कहा : ''विजय देवी माता ने तो क्या, तुम्हारे विश्वास

ईंटें उठायीं, तम्बूरा पाया, भजन से जग को जगाया

जयंती विशेष

३० जून को साँईं टेऊँरामजी की जयंती है (तिथि अनुसार) । इनके माता-पिता संतसेवी थे । टेऊँरामजी का जन्म संतों के आशीर्वाद से हुआ था और आगे चलकर ये भी संत बन गये । ईश्वर के भजन में उनकी गहरी अभिरुचि को दर्शानेवाली उनके जीवन की एक घटना का वर्णन पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

६ जुलाई १८८७ में सिंध देश के खंडू ग्राम में एक बालक का प्राकट्य हुआ और धीरे-धीरे उनका भगवत्प्रेम प्रगाढ़ होता गया और वे संत टेऊँरामजी के रूप में प्रसिद्ध हुए । आसूरामजी उनके गुरु थे । सद्गुरु के कृपा-प्रसाद से उन्होंने स्वयं विश्रांति पायी, प्रसन्नता पायी और दूसरों को भी परमात्म-रस बाँटा ।

एक बार टेऊँरामजी अपने गाँव से एक संत के डेरे पर गये । वहाँ रहे, एक दिन बाजार घूमने गये, वहाँ तम्बूरा दिखा । तम्बूरे का मूल्य १० रुपया था । उस समय १० रुपये बड़े होते थे, कहाँ से लायें ? लौट के आ रहे थे तो देखा कि एक जगह पर मकान की चुनाई हो रही है तो वहाँ मजदूरों को पैसे मिल रहे थे । उन्होंने पूछा : ''एक दिन का कितना पैसा देते हो ?''

मकान बनवाने वाला सेठ बोला : ''तुम करोगे काम ? रोज का एक रुपया मिलेगा । नहीं तो ये जो ईंटें हैं न, ये सारी-की-सारी ईंटें उठाकर चुनाई की जगह पर ढेर लगा दो । बोलो कितने पैसे लोगे ?''

''१० रुपया दे देना । १० रुपया का तम्बूरा आयेगा, बजाऊँगा, गीत परमेश्वर का गाऊँगा, रस लूँगा और रस बाँटूँगा ।''

सेठों का स्वभाव होता है जरा मोल-भाव करना, वह बोला : ''१० रुपये नहीं, ७ रुपये देंगे ।''

''अच्छा ७ ही सही ।''

लगे ईंटें उठाने बड़ी स्फूर्ति व उत्साह से । आधे दिन में डेढ़ दिन का काम कर डाला, फिर शाम तक पूरा कर दिया । ७ रुपये मिल गये ।

सेठ बोलता है : ''भाई ! तुमने तो गजब का काम किया, अब यहीं रह जाओ । तुम्हें रोज एक रुपया मिलेगा ।''

''३ दिन करूँगा, ३ रुपये चाहिए ।''

टेऊँरामजी ने काम पर जाना शुरू कर दिया तो जिन संत के डेरे पर रुके थे उन्होंने कहा : ''तुम सुबह चले जाते हो फिर देर से आते हो । आश्रम में रहते हो तो आश्रम की सेवा किये बिना आश्रम की वस्तुओं का उपयोग करोगे तो सिर पर बोझा चढ़ेगा । आश्रम की सेवा लेते हो, फायदा लेते हो और सेवा नहीं करते हो तो कैसे रहोगे आश्रम में ?''

बोले : ''नहीं, आप जो आज्ञा करें, आश्रम की वह सेवा करूँगा ।''

''कुएँ से पानी की बाल्टी भर-भर के आश्रम की टंकी भर दिया करो ।''

उस जमाने में पम्प-वम्प या पाइपलाइन की व्यवस्था नहीं रही होगी । सुबह ३ बजे उठते, आश्रम की साफ-सफाई करते, पानी-वानी भरते, फिर ध्यान में बैठते । भजन, ध्यान करके सूर्योदय होता तो काम पर चले जाते । ३ दिन में ३ रुपये मिले ।

उन १० रुपये का तम्बूरा लाये । आश्रम में गये तो उस समय वे संत भजन सुन रहे थे । तबलेवाले के पास साँईं टेऊँराम तम्बूरा ले के बैठ गये ।

संत ने पूछा : ''क्या तुम भी भजन गाते हो ?''

संतुलित निद्रा का लाभ लेकर पायें स्वस्थ जीवन

आयुर्वेद में निद्रा को **'अर्धरोगहरी'** बताया गया है। चरक संहिता के अनुसार सुखपूर्वक निद्रा होने से शरीर में आरोग्य, पोषण, बल व वीर्य की वृद्धि होती है, साथ ही ज्ञानेन्द्रियाँ सुचारु रूप से कार्य करती हैं तथा व्यक्ति को पूर्ण आयु-लाभ प्राप्त होता है।

अनिद्रा से ग्रस्त होने के कारण अथवा रात्रि में सही समय पर न सोने से लोग निद्रा के उपरोक्त लाभों से वंचित रह जाते हैं।

अनिद्रा : एक बढ़ती वैश्विक समस्या

अनिद्रा बहुत तेजी से एक गम्भीर वैश्विक स्वास्थ्य-समस्या के रूप में उभर रही है। 'इंटरनेशनल आयुर्वेदिक मेडिकल जर्नल' में प्रकाशित शोध के अनुसार विश्व में हर तीन व्यक्ति में से एक व्यक्ति अनिद्रा से पीड़ित है। इसके कई कारण हैं, जैसे - चिंता, तनाव, धातुक्षय, स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर आदि का अत्यधिक व देर रात तक उपयोग।

अनिद्रा मिटाने के लिए लोग गोलियों, इंजेक्शनों आदि का सेवन करते हैं पर वे प्राकृतिक नींद देने में अक्षम हैं। इनके सेवन से केवल ऐसा प्रतीत होता है कि नींद आ रही है परंतु शरीर को वास्तविक विश्राम नहीं मिल पाता। ये दवाइयाँ स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती हैं जिससे अनेक शारीरिक व मानसिक समस्याएँ उपजती हैं।

अमेरिका के 'नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ' की वेबसाइट पर प्रकाशित एक शोधपत्र के अनुसार 'नींद की गोलियों का सेवन गम्भीर रोगों से संबंधित है तथा कैंसर, गम्भीर संक्रमणों, मनोदशा-विकारों, दुर्घटनाजन्य चोटों, आत्महत्याओं आदि के कारण होनेवाली अकाल मृत्यु के खतरे को बढ़ाता है। अमेरिका में इन दवाओं के अति सेवन से होनेवालीं मौतें सड़क दुर्घटनाओं अथवा हत्या से होनेवालीं मौतों से अधिक हैं।'

गहरी नींद लाने में सहायक प्रयोग

(१) रात को सोने से एकाध घंटे पहले २-४ ग्राम अश्वगंधा चूर्ण* या पीपलामूल (पीपरामूल) का १-२ ग्राम चूर्ण एक गिलास (२५० मि.ली.) दूध के साथ सेवन करने से नींद अच्छी आती है।

(२) सोने से पूर्व जटामांसी का आधा ग्राम चूर्ण १ कटोरी गर्म पानी में भिगो दें। पानी पीने लायक गुनगुना रहने पर यह मिश्रण ले लें। इससे नींद अच्छी आने के साथ मानसिक तनाव, अवसाद (depression) में भी असरकारक लाभ मिलता है।

(३) रात को नाक में देशी गाय के घी* की २-२ बूँदें डालने से नींद अच्छी आती है।

(४) रात को पैरों के तलवों में गाय के घी की मालिश करके सो जायें। इससे शांत और गहरी नींद आती है।

(५) सोने से एकाध घंटे पूर्व ३-४ चम्मच शंखपुष्पी सिरप* एक गिलास गुनगुने दूध के साथ लेने से नींद अच्छी आती है।

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य ! पढ़ें-पढ़ायें अवश्य !

ब्रह्मवेत्ता गुरुओं के पावन चरित्र व उपदेशों से संकलित सत्साहित्य

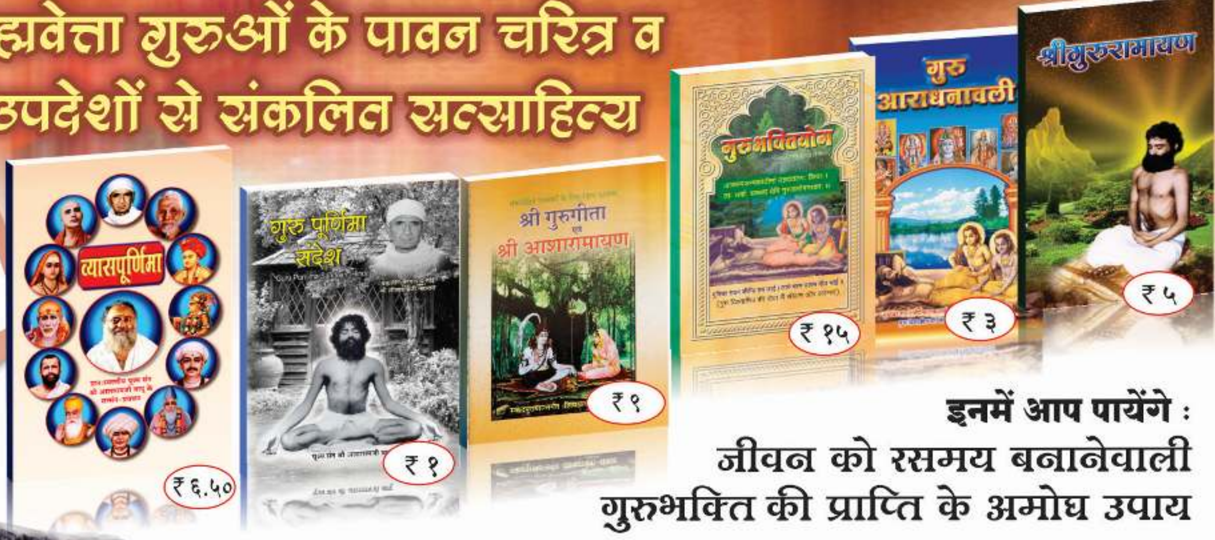

इनमें आप पायेंगे :
जीवन को रसमय बनानेवाली गुरुभक्ति की प्राप्ति के अमोघ उपाय

मुनक्का व काली द्राक्ष

ये वीर्यवर्धक, तृप्तिकारक, वायु को सरलता से निकालनेवाले, पित्तशामक, हृदय के लिए हितकारक, थकान दूर करनेवाले, रक्तवर्धक तथा रक्त व मल शोधक हैं । रक्तपित्त, रक्तप्रदर आदि अनेक रोगों में ये लाभदायी हैं ।

किशमिश

अंगूर के सभी गुणों व दूध के लगभग सभी तत्त्वों से युक्त । करे सूखी खाँसी और खून की कमी दूर । वृद्धावस्था में करे स्वास्थ्य की रक्षा । दूध की अपेक्षा शीघ्र पचनेवाली । शक्ति-स्फूर्तिदायी ।

लीवर टॉनिक सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद ।

आँवला-अदरक शरबत

यह यकृत (liver) व आँतों की कार्यक्षमता, चेहरे की कांति, रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) व भूख बढ़ाता है । इससे पाचन ठीक से होता है एवं शरीर पुष्ट व बलवान बनता है । यह अरुचि, अम्लपित्त (hyperacidity), पेट फूलना, कब्ज आदि अनेक तकलीफों में एवं हृदय, मस्तिष्क व बालों हेतु लाभदायी है ।

पौष्टिकता से भरपूर द्राक्षावलेह

शक्ति, चुस्ती व स्फूर्ति प्रदायक यह औषधि अरुचि, खून की कमी, शारीरिक कमजोरी एवं अम्लपित्त (hyperacidity) में लाभदायी है । यह यकृत (liver) के लिए लाभकारी है एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता (immunity) बढ़ाता है । पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर है ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

विश्व-मांगल्य व संस्कृति-रक्षण की अनेकानेक सत्प्रवृत्तियों के संचालन-स्थल अहमदाबाद आश्रम की सुरक्षा हेतु उठ रही हैं

देशव्यापी आवाज, सौंपे जा रहे हैं ज्ञापन

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st June 2025

धरना प्रदर्शन

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन | लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक :** धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक :** श्रीनिवास र. कुलकर्णी